ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 90-92**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

पर्यावरण क्षरण एवं संरक्षण हेतु सामाजिक प्रयास

डॉ0 प्रियंका यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर (गेस्ट फैकल्टी) समाजशास्त्र विभाग, ग्राम भारती महाविद्यालय, रामगढ़ कैमूर (बिहार), भारत

Received-23.04.2024, Revised-30.04.2024, Accepted-04.05.2024 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः *पर्यावरण संसार का एक महत्वपूर्ण घटक है। जिसका आशय ऐसे वातावरण से है, जिसमें सम्पूर्ण ब्राह्माण्ड तथा जीव–जगत घिरे हुये है। वर्तमान समय में विज्ञान के बढ़ते चरणों ने पर्यावरण क्षरण की समस्या को अत्यधिक विकट बना दिया है। आज पूरे विश्व के वैज्ञानिक व सरकारें इस प्रयास में है कि किसी भी तरह से पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त किया जाये। विश्व स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रमुख संगठनों तथा समितियों का गठन एवं अनेक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जा रहा है।*

कुंजीभूत शब्द– पर्यावरण संसार, वातावरण, ब्राह्माण्ड, जीव–जगत, पर्यावरण क्षरण, पर्यावरण संरक्षण, क्रियान्वयन, जीवनयुक्त।

पर्यावरण सृष्टि में सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव से लेकर समस्त प्राणी जगत् का अस्तित्व बनाये रखने के लिए अनिवार्य है। ये संसार का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसके अभाव में किसी जीव के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पर्यावरण के कारण ही पृथ्वी पर जीवन सम्भव हो सका, जबकि अन्य ग्रहों पर पर्यावरण की अनुपस्थिति के कारण ही किसी भी जीव का जीवित रहना सम्भव नहीं है। पर्यावरण और जीव एक दूसरे के पूरक है।

पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ आवेष्टित करना या चारों ओर से घेरना है। शैक्षिक जगत् में इस शब्द का प्रयोग कई प्रकार से किया गया है। मनोविज्ञान एवं जीवविज्ञान में जीवनयुक्त वस्तुओं की चारित्रिक विशेषताओं के निर्धारक कारकों में इस पर अत्यधिक आनुवंशिकता के साथ विचार किया जाता है तथा कुछ विशेषताओं को पर्यावरण का तो कुछ अन्य विशेषताओं को आनुवंशिकता का प्रतिफल माना जाता है। जो कुछ वंशानुगत रूप में संचरण होता है उसे आनुवंशिकता और जो वाह्य रूप में प्रभावित करता है, उसे पर्यावरण कहा गया है।[1]

पर्यावरण क्षरण– पर्यावरण क्षरण से आशय किसी क्षेत्र में पर्यावरण विनाश की प्रक्रिया से है, जिसमें भौतिक वातावरण के एक या अधिक तत्वों की मूल प्रवृत्ति में ह्रास हो जाता है। पर्यावरण एवं मानव के सह सम्बन्ध में असंतुलन आने के कारण ही विविध पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती है। मानव ने अपनी विविध इच्छाओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण संतुलन अव्यवस्थित किया है। मानव द्वारा इस प्रकार पर्यावरण पर अवांछनीय एवं अदूरदर्शितापूर्ण अतिक्रमण करने से ही पर्यावरण क्षरण होता है। जैविक तथा अजैविक तत्वों का समूह ही पर्यावरण है। इन सभी तत्वों का निश्चित अनुपात में होना पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक है। जब किसी भी तत्व के अनुपात में प्राकृतिक या मानवीय कारणों से परिवर्तन आता है तो पर्यावरण क्षरण होने लगता है। एक सीमा तक प्रकृति की स्वनियामक व्यवस्था तो इस परिवर्तन की क्षतिपूर्ति कर लेती है, लेकिन जब मानव द्वारा हस्तक्षेप अधिक होने लगता है तब पर्यावरण क्षरण होता है। पर्यावरण क्षरण दो कारणों से होता है प्राकृतिक एवं मानवीय हस्तक्षेप। प्राकृतिक कारणों द्वारा क्षरण सीमित स्तर पर होता है और स्वयं प्रकृति ही उसे धीरे–धीरे समायोजित कर लेती है तथा दूसरी ओर मानवीय हस्तक्षेप का प्रभाव व्यापक स्तर पर होता है। प्राकृतिक एवं मानवीय हस्तक्षेप परस्पर अन्तर्सम्बन्धित होता हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

प्रकृति की विविध क्रियाएँ पर्यावरण क्षरण का कारण बनती है। जिसे प्राकृतिक प्रकोप कहा जाता है। प्रकृति की इन विविध क्रियाओं में बाढ़, सूखा, ज्वालामुखी, भूकम्प, मृदा अपरदन, मरुस्थलीकरण एवं भूस्खलन आदि सम्मिलित है।[2]

सूक्ष्म मौसम विभाग के अनुसार वर्षा सामान्य से 26 से 50 प्रतिशत जब किसी क्षेत्र में कम होती है तो उसे सामान्य सूखा कहते हैं और इससे कम वर्षा भयंकर सूखा का कारण बनता है। जैविक क्रियाएँ जल की उपस्थिति के बिना सम्भव नहीं है। किसी भी क्षेत्र में सूखे की पुनरावृत्ति होने से इसकी भयावहता बढ़ जाती है। सूखा तात्कालिक व दूरगामी दोनों तरिके से प्रभावित करता है। सतही व भूगर्भिक जल का अभाव अनावृष्टि के कारण होता है, और प्राणियों व वनस्पतियों का अस्तित्व संकट में पड़ जाता है। आर्थिक विकास की गति धीमी हो जाती है। बाढ़ के लिए भारी वर्षा, हिमखण्डों का पिघलना, नदियों के घुमावदार मोड, भूकम्प आदि कारण उत्तरदायी है। बाढ़ एक प्राकृतिक घटना होने के साथ–साथ मानवजन्य संकट भी है। मनुष्य द्वारा वनों की कटाई, तटबन्धों का निर्माण, नदियों के मार्ग में निर्माण कार्य आदि कारक बाढ़ के लिए उत्तरदायी है। सम्पूर्ण विश्व में मरुस्थलीकरण पर्यावरण की एक प्रमुख समस्या है। अनेक प्राकृतिक व मानवीय कारक मरुस्थलीकरण के लिए उत्तरदायी है। जलवायु परिवर्तन, कम वर्षा, भूमि एवं जल का खारापन, अनियंत्रित पशुचारण खनन गतिविधियाँ, मृदा अपरदन, औद्योगिक प्रदूषण, आणविक परीक्षण आदि इनमें प्रमुख है।[3]

पर्यावरण क्षरण का एक प्रमुख कारण मृदा अपरदन है। मृदा अपरदन से भूमि की उर्वरता में ह्रास होता है। भूमि पर नालियाँ, गर्त तथा बीहड़ बन जाने से धरती बंजर होने लगती है। सूखे व बाढ़ के प्रकोप में वृद्धि तथा रेतीले प्रदेशों का तीव्र गति से विस्तार होने लगता है। वन्य प्राणियों की संख्या घटती जाती है तथा वनस्पति आवरण समाप्त होता जाता है। मृदा अपरदन से भूस्खलन भी बढ़ते हैं। उपजाऊ भूमि के अभाव में कृषि उत्पादन में कमी आ जाती है। विद्वानों ने इन्हीं दुष्परिणामों के कारण मृदा अपरदन को 'रेंगती हुई मृत्यु' कहा है। भूकम्प ऐसी प्राकृतिक विनाशकारी घटना है, जिसके आगे आज भी विज्ञान तथा मनुष्य असहाय है। अचानक घटने वाली इस प्राकृतिक घटना से अत्यधिक विनाश होता है। भूकम्प से सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में अत्यधिक झटकों से भवन, रेलमार्ग, पुल, बांध, सड़क व कारखानों को हानी पहुँचती है, भूकम्प के कम्पन से धरातल के उत्थान अवतलन, दरार पड़ना तथा भूस्खलन की घटनाएँ होती है। इनके कारण कभी–कभी कारखानों, खानों तथा घरों में आग लगने से भीषण अग्निकाण्ड हो जाते हैं इस प्रकार

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

पर्यावरण को भूकम्प से अत्यधिक हानी होती है।[4]

मनुष्य अपने सुख सुविधाओं तथा प्रगति के लिए अनेक ऐसे कार्य कर रहा है, जो पर्यावरण क्षरण के प्रमुख कारण है। अनेक प्राकृतिक प्रकोपों की प्रभावशीलता मनुष्य के क्रियाकलापों से बढ़ी है। मनुष्य की क्रियाओं में उपभोगवादी दर्शन या संस्कृति, वन्य जीवों का विनाश, वन का विनाश, कृषि व पशुपालन अधिक सिंचाई, जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकरण, नगरीकरण, बड़ें–बड़ें बाँधों का निर्माण, खनन ऊर्जा का अधिक उपयोग आदि सम्मिलित है। इस प्रकार पर्यावरण क्षरण के लिए मनुष्य ही सर्वाधिक उत्तरदायी है। पर्यावरण क्षरण वर्तमान समय में मानव की उपभोगवादी संस्कृति की देन है।

पश्चिमी भोगवादी संस्कृति के प्रभाव में अत्यधिक सुख सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए मानव ने प्रकृति का अविवेकपूर्ण ढ़ंग से दोहन प्रारम्भ कर दिया है।[5] वन हमारे पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण घटक है जो सम्पूर्ण विश्व के पर्यावरण को नियंत्रित करता है। जनसंख्या तथा मानव की आवश्यकताओं में वृद्धि के कारण धरातल पर वन का विनाश हो रहा है जो पर्यावरण क्षरण का प्रमुख कारण है। सघन कृषि से विभिन्न पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो गयी है। हरित क्रांति के अभिष्ट लक्ष्य से खाद्यान्न में तो वृद्धि प्राप्त हो गयी लेकिन इससे पर्यावरण ह्मस हो रहा है।

मानव ने कृषि कार्यों के लिए नियमित जलापूर्ति हेतु सिंचाई के साधनों का विकास किया। बांध बनाकर तथा नदियों से नहरे निकाल कर सिंचाई करने से कृषि उत्पादन व कृषि क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि हुई है, किन्तु सिंचाई के लिए जल के अलावा भूमिगत जल का दोहन भी बड़ें पैमानें पर किया जा रहा है। परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र में तो वृद्धि हुई है लेकिन भूमिगत जल स्तर तीव्र गति से घट रहा है। पर्यावरण क्षरण के मूल कारणों में जनसंख्या वृद्धि भी है। जनसंख्या वृद्धि के कारण भूमि, जल, खनिज आदि प्राकृतिक संसाधनों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में निरन्तर ह्मस होता जा रहा है। पर्यावरण क्षरण से ग्लोबल वार्मिंग, जैव विविधता, ग्रीन हाउस प्रभाव, औजोन परत का क्षय एवं परिस्थितिकीय असंतुलन जैसे प्रभाव दिखाई दे रहे हैं।[6] क्षरण के कारण पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि हो रही है, जिससे समुद्र का जल स्तर निरन्तर बढ़ रहा है।[7]

पर्यावरण संरक्षण हेतु सामाजिक प्रयास– पर्यावरण संकट को रोकने के लिए भारत में 1972 में एक पर्यावरण समिति का गठन किया गया। आज पूरे विश्व के वैज्ञानिक व सरकारें इस प्रयास में है कि किसी भी तरह से पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त किया जाये। एक अन्य समिति का गठन 1980 में किया गया जिसे विभिन्न कानूनों तथा पर्यावरण को बढ़ावा देने वाले प्रशासनिक तन्त्र की विवेचना करने एवं उनकों सुदृढ़ करने हेतु सिफारिशे देने का कार्य सौंपा गया।

पर्यावरण कार्यक्रमों के नियोजन प्रोत्साहन और समन्वय के लिए 1985 में पर्यावरण संरक्षण, वन्य एवं वन्य जीवन मंत्रालय की स्थापना की गयी। इस मंत्रालय के सौजन्य से देश में पर्यावरण संरक्षण के लिए कानून में विभिन्न प्रयास किये गये है, इन प्रयासों में पर्यावरण संरक्षण के लिए कानून बनाना, सम्मिलित है। केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए लगभग 30 कानून बनायें है इनमें से कुछ प्रमुख कानून है, जल प्रदूषण निवारक एवं नियंत्रण अधिनियम 1974, वायु प्रदूषण एवं नियंत्रण अधिनियम 1981, फैक्ट्री अधिनियम और कीटनाशक अधिनियम राष्ट्रीय पर्यावरण ट्रिब्यूनल अधिनियम 1995। इन अधिनियमों का क्रियान्वयन केन्द्रीय और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, कृषि–विभाग के कीटनाशक निरीक्षक एवं कारखानों के मुख्य निरिक्षकों द्वारा कराया जाता है। सरकार पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 बनाया है। जिसके द्वारा देश के पर्यावरण से सम्बन्धित सभी मामलों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है तथा वर्तमान अधिनियम की कमियों को दूर किया जाता है।[8]

विश्व स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए जो जन जागरूकता पैदा हुई है। उसके परिणामस्वरूप कुछ प्रमुख संगठनों एवं समितियों का गठन कर उसके तहत अनेक कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया जा रहा है। प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय संघ जो जैविक साधनों के बचाव एवं संतुष्टि के लिए प्रयत्नशील है इस संस्था का गठन 1948 में किया गया जिसका मुख्यालय मोरजेम (स्विट्जरलैण्ड) में है।

यूनेस्कों का मनुष्य एवं जीवन मण्डल कार्यक्रम 1970 में यूनेस्कों द्वारा किया गया जिसका उद्देश्य मनुष्य के कार्यकलापों एवं प्राकृतिक पर्यावरण के मध्य होने वाले अन्तःक्रियाओं के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का प्रबन्ध करना है। पर्यावरण संरक्षण एजेन्सी की स्थापना 1970 में की गई जो वायु, जल ठोस अवशिष्ट विकिरण, शोर तथा कीटनाशकों से रक्षा करती है। संयुक्त राष्ट्र का पर्यावरण कार्यक्रम 5 जून से 12 जून 1972 को गठित हुआ जिसका उद्देश्य पर्यावरण की रक्षा के लिए किये जा रहे प्रयासों का नेतृत्व करना है। जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन 2002, कोपेनहेग शिखर सम्मेलन 2009, डरवन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन 2011, रियो+20 पृथ्वी सम्मेलन 2012, जैव विविधता पर कोप–11 सम्मेलन 2012, दोहा जलवायु परिवर्तन सम्मेलन 26 नवम्बर से 8 दिसम्बर 2012 में सम्पन्न हुआ है।[9] दुबई जलवायु परिवर्तन पर कोप–28 सम्मेलन 30 नवम्बर से 12 दिसम्बर 2023 में सम्पन्न हुआ है।[10] बाकू अबसेरॉन, अजरबैजान जलवायु परिवर्तन पर कोप–29, सम्मेलन 11 नवम्बर से 22 नवम्बर 2024 को सम्पन्न होगा।[11] इन सभी सम्मेलनों का गठन पर्यावरण संरक्षण के लिए किया गया है।

पर्यावरण के क्षरण का विषय नवीन नहीं है, यद्यपि इस पर विश्व समुदाय का ध्यान बीसवीं शताब्दी के बीच के वर्षो में ही आकृष्ट हो गया है। विज्ञान के बढ़ते चरणों ने पर्यावरण अपक्षय की विकट समस्या गहरा दिया है। जहाँ एक ओर मनुष्य के जीवन में विज्ञान वरदान साबित हुआ है। वही इसने मानव जीवन के लिए कई संकट पैदा किये है।

विज्ञान का ही प्रतिफल औद्योगीकरण है, जिसके परिणाम किसी से छिपे नहीं है। इस औद्योगीकरण ने ही पर्यावरण की अनेक समस्याओं को पैदा किया है, जिसके विषय में जन जागरूकता में उभार पिछली शताब्दी में ही आया है, किन्तु इसमें और अधिक अमल करने की आवश्यकता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रावत, हरिकृष्ण (2014), उच्चत्तर समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. यादव, दयाशंकर सिंह, (2014), पर्यावरण का समाजशास्त्र, पब्लिकेशन्स, विजडम बुक्स वाराणसी।
3. राशि सिंह : जलवायु परिवर्तन : एक पुनर्विलोकन, अंक 18 (2020), जिज्ञास।
4. https://www.research.net.
5. व्यास, के.एल. (2007), पर्यावरण संरक्षण एवं भारती संस्कृति, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली।
6. यादव, दयाशंकर सिंह, (2014), पर्यावरण का समाजशास्त्र, पब्लिकेशन्स, विजडम बुक्स वाराणसी।
7. व्यास, एस. एवं शर्मा एस.डी. (2013), भारती समाज : मुद्दे एवं समस्याएँ निखिल पब्लिशर्स एण्ड ड्रिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर।
8. https://www.drishtiias.com.
9. शर्मा, जी.एल. (2015), सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
10. https://www.cop28.com.
11. https://unfccc.int>cop29>ifp.

*****